Journal Homepage: - www.journalijar.com
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)
ISSN NO. 2320-5407
Article DOI: 10.21474/IJAR01/4760
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/4760

RESEARCH ARTICLE

शोध प्रबन्ध का प्रारूप झालावाड़ जिले में पर्यटन विकास एवं पर्यावरण एक भोगोलिक अध्ययन झालावाड़ जिले में पर्यटन स्थलों के अध्ययन में पी.एच. डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत.

नीलोफर अगवान and **डॉ. कुशल सिंह मेहता.**
Pacific Academy of Higher Education and Research University Udaipur.

……………………………………………………………………………………………….....

Manuscript Info ***Abstract***

Manuscript History

Received: 6 May 2017
Final Accepted: 8 June 2017
Published: July 2017

Copy Right, IJAR, 2017,. All rights reserved.

……………………………………………………………………………………………….....

Introduction:-

पर्यटन शब्द का प्रयोग मूलत फ्रेंच भाषा के शब्द टूअर के सन्दर्भ में किया जाता है। पर्यटन प्राकृतिक घटनाओं तथा पारस्परिक संबंधों के महत्व तथा उपयोगिता को दर्शाता है। पिछले कुछ वर्षों तक पर्यटन पर उच्च तथा सम्पन्न आर्थिक वर्ग का ही अधिकार माना जाता था और पर्यटन का उद्देश्य प्रधानतः घूमना और मनोरंजन करना होता था। या फिर अपने परिवार जनों को धार्मिक यात्रायें कराना था, परन्तु अब निम्न आय वर्ग के व्यक्ति भी पर्यटन में भाग लेने लगे है। भारत में अनके क्षेत्रौं में जिसमें विशेषकर राजस्थान पर्यटन में विशेष रूचि का स्थान रखता है। यहां के ग्रामीण अंचल में अनेक ऐतिहासिक धरोहरें किले व हवेलीयां है, तथा सांस्कृतिक सम्पन्नता में विविध जनजातियां रंग–बिरगें परिधानों की विविधता, लोकसंगीत व नृत्य अनोखी संस्कृति व आनन्दमय प्राकृतिक सोन्दर्यता, विभिन्न जीव, उद्यान, मंदिरों के कारण देशी–विदेशी पर्यटकों के स्वाभाविक रूप से आर्कषण का केन्द्र बना हुआ है। ये सभी कारण राजस्थान में पर्यटन के विकसित होने के प्रमाण प्रस्तुत करते है। पर्यटन एक उद्योग है जो लोगों को उनके आगमन पर नियत स्थान की तरफ आकर्षित करने, उसे वहां तक पहुंचाने, आहार प्रधान करने तथा उनकी वापसी पर उन्हें घर तक पहुंचाने से संबंधित है। हमारे लिए पर्यावरण को गन्दा करना दण्डनीय अपराध बनाना सिंगापुर की तरह ही आवश्यक हो जायेगा। लेकिन ऐसे उपाय प्रवर्तित करने से पहले जन स्वास्थ्य और सफाई के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध करानी होगी।

पहले भारत को सिर्फ प्राचीन संस्कृति का धरोहर वाला देश समझा जाता था परन्तु अब ऐसे पर्यटन स्थलों के प्रति पर्यटकों की रूचि अधिक बढ़ रही है। जहां वे अपना समय प्राकृतिक सौन्दर्य और सांस्कृतिक नवीनता के बीच बीता सके। हमारा देश पर्यावरणीय विविधताओं वाला देश है। पर्यटकों के लिए बाईबिल कही जाने वाली पत्रिका lovely planate के सर्वेक्षण में भारत को पर्यटन के मामले में पांचवां स्थान दिया है।

शोध अभिकल्पः–

उद्देश्य :–
पर्यटन के उद्देश्य निम्न हो सकते हैः–
1. मानसिक शान्ति
2. शारिरीक स्वास्थ्य
3. मनोंरंजन
4. धार्मिक व अध्यात्मिक भावना
5. ऐतिहासिक व सांस्कृतिक स्थलों के प्रति रूचि
6. पर्यटन से होने वाले प्रभावों का अध्ययन

समस्या का कथनः–

झालावाड़ जिले में पर्यटन विकास एवं पर्यावरण एवं भौगोलिक अध्ययन

Corresponding Author:- नीलोफर अगवान.
Address:- Pacific Academy of Higher Education and Research University Udaipur.

पृष्ठभूमि :–
वातावरण के स्वरूप, स्थिति और स्थानिक वितरण व उनके अन्तसंबंधों के अध्ययन का संबंध स्थानिक दशाओं, पर्यटन स्थलों की स्थिति से होता है। पर्यटन उद्योग के विकास के लिए पर्यटक उत्पादकों की पर्याप्तता का होना आवश्यक हैं। इन उत्पादकों पर ही पर्यटन उद्योग की आय निर्भर करती है। प्राचीन काल से ही लोग ज्ञान की खोज में देश–विदेश की यात्रा करते रहे है। पर्यटन द्वारा दो देशों के मध्य की दूरी कम होती है। पण्डित जवाहार लाला नेहरू ने लिखा है कि हमें देशी व विदेशी मित्रों का स्वागत करना चाहिए न केवल इसलिए कि पर्यटन से विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है, बल्कि इसलिये भी कि इससे ज्यादा आपसी सद्भाव व सूझ–बूझ की भावना बढ़ती है।

महत्व :–
आधुनिक समय में शहरी वातावरण की जनता अस्त–व्यस्त व भौतिक जीवनशैली से उबरकर तनाव दूर करने, मानसिक शांति पाने के लिए प्राकृतिक स्थानों की और आकृषित हो रहे है।

परिकल्पना :–

1. झालावाड़ के पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी का अभाव है। इस शोध से पर्यटकों को पर्यटन केन्द्रों के बारे में निर्देशित करने वाली सम्पूर्ण उपयुक्त सामग्री प्राप्त होगी।
2. पर्यावरणीय संरक्षण की योजनाओं को प्रोत्साहन मिलेगा जो कि इस क्षेत्र में व्याप्त भौगोलिक विषमताओं को कम करने में सहायक होगी।
3. झालावाड़ क्षेत्र में पर्यटन उद्योग के रूप में विकसित होने से स्थानीय लोगों में विभिन्न देशी–विदेशी संस्कृतियों एवं संस्कारों को जानने–समझने एवं उचित आचार व्यवहार करने के मानवीय गुण विकसित हो सकेंगें।
4. पर्यटन केन्द्रो पर स्थित प्राचीन शिलालेख और स्तम्भ संरक्षण कअभाव में लुप्त होते जा रहे है, असामाजिक तत्वों द्वारा इनका दुरूपयोग किया जा रहा है। और सरकार द्वारा इनके उचित संरक्षण एवं संवर्धन का भी आभाव है जिसके परिणामस्वरूप पर्यटन स्थल धीरे–धीरे पर्यटकों को आर्कषित करने में असमर्थ होते जा रहे है। इन्हें संरक्षण प्राप्त होगा।

शोध प्रणाली :–
प्रस्तुत शोध अध्ययन को निम्न चरणों में पूर्ण किया जाएगा। ऐतिहासिक तथा सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य की जानकारी मूल ग्रन्थ वेबसाइट, जर्नल, प्रोजेक्ट रिर्पोट, सरकारी तथा गैर सरकारी वार्षिक रिर्पोट आदि स्त्रोंतों से शोध साहित्य सामग्री का संचयन करना।

- ❖ पर्यटक की गुणवत्ता व मात्रात्मक मांग व पर्यटन के सन्दर्भ के साथ सेवाओं की आपूर्ति किसी विशेष प्रकार के डिजाइन किये हुए प्रश्नवाली के द्वारा की जायेगी।
- ❖ सामान्यता व प्रभावकारी परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए प्रतिचयन विधि, सांख्यिकी विश्लेषण द्वारा तैयार की जायेगी।

प्रयुक्त चर :–
प्रतिचयन विधि :– इस शोध कार्य के लिए झालावाड़ के स्थानीय लोगों, देशी –विदेशी पर्यटकों एवं विभिन्न पर्यटन संस्थाओं को चुन जायेगा।
उपकरण :– शोध में उपकरण के रूप में स्वयं निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया जायेगा।
झालावाड़ जिले के पर्यटन स्थल :–

झालावाड़ जिले के पर्यटन स्थल निम्न है।
1. गढ़ पैलेस
2. भवानी नाटयशाला
3. राजकीय संग्रहालय
4. तिकोना घण्टाघर
5. पृथ्वी विलास भवन (बड़ी कोठी)
6. वीरेन्द्र भवन (छोटी कोठी)
7. भवानी परमानन्द पुस्तकालय
8. राजकीय हरिशचन्द्र पुस्तकालय
9. भवानी क्लब
10. खण्डिय तालाब

सुझावः–
ढांचागत सुविधाओं से सम्बधिंत सुझाव :–
1. सामान्य अन्तरसंरचना सुविधा का विस्तार
2. परिवहन का विस्तार
3. आवास तथा भोजन का विस्तार
4. गाइड सुविधा में वृद्धि

सन्दर्भ– ग्रन्थ :–

1. अधिकारी : हिमालय पर्यटन उद्योग,भौगोलिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयाम, नार्दन बुक सेन्टर, दरियागंज नई दिल्ली
2. नाथूलाल : हाड़ौती दर्शन, हाडौती शौध प्रतिष्ठान कोटा।
3. पाल.एच.भीष्म : पर्यटकों का आकर्षण राजस्थान।
4. पाठक, सत्यप्रकाश : उत्तर प्रदेश के तीर्थस्थलों का भौगोलिक अध्ययन

5. मिश्र, बलदेव प्रसाद : राजस्थान मात्रा (कर्नल टॉड कृत) यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर
6. राव गजनन राव : भारत के पर्यटन स्थल, पर्यटन मंत्रलय भारत सरकार
7. शाह सं. शाह : सांस्कृमि राजस्थान, पंचषील प्रकाशन
8. श्रीवास्तव, प्रो.जगतनरायण : अतीत के स्वर्णिम पृष्ठ जिला जनसर्म्पक कार्यालय कोटा
9. Acharya Ram: Tourism and cultural heritage of India(1930) R.B.S.A. publication, Jaipur, India.
10. Akhter J.: Tourism Management in India, Ashirwad Publication Jaipur, (1995)
11. Ambit : Tourism Development in Shiv Shanker, Mahaswariyya Geography
12. Bhatiya A.K. : Tourism Development principles and practices
13. Bhatiya A.K. : Tourism in India, stating publication, New Delhi
14. Chattopadhya : Economic Impact of
15. Chopra : Tourism Development in India Ashirwad Publication, 1995
16. Garg. N.K. : Tourism and Economic Development Ashirwad Publication Jaipur
17. Gupta S.P. : Tourism Museaums and Monuments in India Publication, Delhi
18. Jyoti Jayar : The tourism Market- Bas of goods And services singh Tej Virated (E)
19. Kumar, Krishna : Tourism Industries in Kumawn(Agra Univ.)
20. Kumar, M. : Tourism Today, An Perspective 1992
21. Negi J. : Tourism Development Resource conversation Ashirwad Publication, 1994
22. Kumar Krishna K. Chanel Mohinder (2004) Basics of Tourism, Kanishka Publication New Delhi.
23. Kumar Pro. Kapil (2001) : Tourism Impect, MTM-10, IGNOU text Book New Delhi
24. Pathnaik Aniya Kumar: Tourism Journal the green postal Kerla Institute of Tourism and Travel Studies.